ज्ञान शांति मैत्री

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

हिंदी विश्वविद्यालय में कथा परिसंवाद का उदघाटन, नव सामाजिक यथार्थ और समकालीन हिंदी कहानी पर वक्ताओं ने किया विमर्श

यथार्थ अब जीवन से विदा हो गया है-विजेन्द्र नारायण सिंह

बीज वक्तव्य देते हुए चंदन पांडेय। मंच पर दाएं से विजेन्द्र नारायण सिंह, से. रा. यात्री, कुलपति विभूति नारायण राय तथा राकेश मिश्र।

वक्तव्य देते हुए विजेन्द्र नारायण सिंह। मंच पर दाएं से से. रा. यात्री तथा राकेश मिश्र।

वर्धा दि. 20 जनवरी 2012: सुविख्यात आलोचक विजेन्द्र नारायण सिंह का मानना है कि हमारे समय में ऐतिहासिक समय को धक्का लगा है, अब सबकुछ बदला है। मोटे तौर पर माने तो यथार्थ अब जीवन से विदा हो गया है। सावित्री, अनसुया आदि साहित्य में तो है परंतु जीवन में इनके प्रतिमान नहीं मिल रहे हैं। पूंजी और श्रम का एक दूसरे के साथ जो संबंध था वह अब टूट जाने से मानीवयता नहीं प्रकट हो रही है। वे महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में शुक्रवार को दो दिवसीय कथा परिसंवाद के उदघाटन के अवसर पर बोल रहे थे। हबीब तनवीर सभागार में कुलपति विभूति नारायण राय की अध्यक्षता में हुए उदघाटन समारोह के अवसर कथाकार तथा अतिथि लेखक से. रा. यात्री व संयोजक रोकश मिश्र मंचस्थ थे। 20 और 21 जनवरी को 'नव सामाजिक यथार्थ और समकालीन हिंदी कहानी' पर आयोजित इस परिसंवाद में देशभर के कथालेखक उपस्थित हुए हैं।

समारोह का प्रारंभ कथाकार चंदन पांडे के बीज वक्तव्य से हुआ। उन्होंने विश्व परिदृश्य का हवाला देते हुए इंटरनेट और वेब की दुनिया में हो रहे बदलाव अधोरेखित किये। उन्होंने किसान आत्महत्या का उल्लेख करते करते हुए कहा कि उत्पादन में कमी, कर्ज और कृषि का नुकसान ये मुददे किसान आत्महत्या को प्रेरित कर रहे हैं। उन्होंने भूमंडलीकरण, स्त्री-पुरूष संबंधों में आए बदलाव आदि पर भी प्रकाश डाला।

कथाकार जननंदन ने कहा कि समय के अनुसार कहानियों को भी बदलना चाहिए। उन्होंने खेद जताते हुए कहा कि पिछले 20 वर्षों में भूखमरी, बेरोजगारी और गरीबी पर कोई कहानी नहीं आयी है। उन्होंने कहा कि हिंदी कहानी के साथ-साथ नव सामाजिक यथार्थ भी हर पल बदल रहा है। अपने उदबोधन में से. रा. यात्री ने कहा कि हमने 50 वर्ष पहले लिखना शुरू किया था। वह समय नेहरू युग से जाना जाता था और गुटनिरपेक्षता व मिश्रित पूंजी का जमाना था। लेखक के यथार्थवाद का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि लेखक के यथार्थवाद को हम कई छवियों में देखते है और उसकी रचनाएं कई स्तर पर व्याख्यायित होती है। इस

अवसर पर कथा लेखिका सुशीला टाकभौरे ने भी अपनी बात रखी। समारोह का संचालन संयोजक राकेश मिश्र ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन साहित्य विद्यापीठ के प्रो. के. के. सिंह ने किया। इस अवसर पर प्रल्हाद अग्रवाल, शिवमूर्ति, धीरेंद्र अस्थाना, शैलेंद्र सागर, वंदना राग, जयप्रकाश, कैलाश वनवासी, शैलेंद्र कुमार त्रिपाठी, तेजिंदर, मनोज रूपडा, बसंत त्रिपाठी, कैलाश वानखेडे, पराग मांदले, ओम शर्मा, अनुज, अजय वर्मा, पंकज मित्र, कुणाल सिंह, चंदन पांडेय, राहुल सिंह, शशि भूषण और तरूण भटनागर आदि कथा लेखक, विश्वविद्यालय के अध्यापक, छात्र-छात्राएं उपस्थित थे।

बी. एस. मिरगे
जनसंपर्क अधिकारी